TDC Part- I HINDI HONS
Paper – I
हिंदी साहित्य का इतिहास
शे.शं.मि./ई.कं./एम.पी.एस.

कृष्णभक्ति काव्य : परंपरा और प्रवृत्तियाँ

भारतीय धर्म और संस्कृति के इतिहास में श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व अत्यंत विलक्षण है| मध्यकालीन सगुण भक्ति के आराध्य देवताओं में भगवान् श्रीकृष्ण का स्थान सर्वोपरि है | कृष्ण भारतीय पुराण और इतिहास दोनों में सर्वाधिक वर्णित हुए हैं | श्रीकृष्ण पूर्णावतार हैं | अध्यात्म-क्षेत्र में वे ब्रह्म, परब्रह्म, नारायण, ईश्वर और विष्णु आदि के रूप में स्वीकृत हैं | कृष्ण वैदिककालीन देवता हैं और सनातन धर्म में वैष्णव-उपासकों की अखंड आस्था के केंद्र रहे हैं |

भारतीय वाङ्मय में कृष्ण वैदिक ऋषि के रूप में भी ख्यात हैं | ऋग्वेद के अष्टम तथा दशम मंडल के कुछ सूक्तों के रचयिता ऋषि कृष्ण हैं | इसी वेद के प्रथम मंडल में भी कृष्ण का उल्लेख है | 'कौशीतकी ब्राह्मण' में आंगिरस ऋषि के शिष्य कृष्ण का वर्णन है | 'छन्दोग्योपनिषद्' में भी आंगिरस के शिष्य कृष्ण का संकेत है, जिसे देवकी का पुत्र कहा गया है |

पुराण ग्रंथों में श्रीकृष्ण के आध्यात्मिक रूप को प्रतिष्ठा मिली है | अन्य अवतारों को अंशावतार किन्तु श्रीकृष्ण को पूर्णावतार कहा गया है | 'भागवत पुराण' में कृष्ण की महिमा का गान करते हुए कहा गया है कि समस्त वेद भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना करते हैं; योग साधना से श्रीकृष्ण की प्राप्ति होती है, समस्त तपस्याओं का प्रातव्य फल कृष्ण हैं और सम्पूर्ण गतियों के लक्ष्य भी भगवान् श्री कृष्ण ही हैं | भागवत पुराण, हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण, पद्म पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्ण की महिमा का गान बड़े विस्तार से हुआ है | भक्तों के आराध्य होने के साथ-साथ वे भक्तवत्सल भी हैं, लोक-रक्षक होने के साथ लोकरंजक भी हैं |

संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश काव्यग्रंथों में श्रीकृष्ण का उल्लेख है | आधुनिक भारतीय भाषाओं में कृष्ण-काव्य का प्रारंभ मैथिल-कोकिल विद्यापति से स्वीकार किया जाता है | 'विद्यापति की पदावली' में अधिकांश पद राधाकृष्ण की प्रेम-लीलाओं पर केन्द्रित हैं | मध्ययुग में कृष्णभक्ति का प्रचार ब्रजमंडल में बड़े उत्साह और भक्ति भाव के साथ हुआ | इस सन्दर्भ में वल्लभ, निम्बार्क, राधावल्लभ, हरिदासी और चैतन्य (गौड़ीय) सम्प्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं | कृष्णभक्ति-काव्य को जन-जन तक पहुँचाने का श्रेय वल्लभाचार्य के आठ शिष्य जिन्हें 'अष्टछाप' के रूप में जाना गया, को जाता है |

हिंदी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की अजस्र धारा को प्रवाहित करनेवाले भक्त कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरि है | इनके अतिरिक्त कुम्भनदास, परमानंददास, कृष्णदास, नन्ददास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास के अतिरिक्त मीरांबाई तथा रसखान के नाम कृष्णभक्त कवियों में उल्लेखनीय हैं |

कृष्ण-भक्तिकाव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ

1.कृष्ण लीला वर्णन –

मध्यकालीन कृष्ण भक्त कवियों ने लोकरंजनकारी कृष्ण की लीलाओं का उन्मुक्त गान किया है | कृष्ण की लीलाओं का उद्देश्य अखंड आनंद में जीवन की आध्यात्मिक परिपूर्णता की अभिव्यंजना करना है | कृष्ण लीला के अनेक रूप – बालगोपाल की वात्सल्यपूर्ण लीलाएँ, सख्य रूप में लीलाएँ तथा माधुर्य भावपूर्ण लीलाएँ मध्यकालीन हिंदी कृष्ण भक्तिकाव्य में वर्णित हुए हैं |

2.भक्ति भावना –

कृष्ण भक्तिकाव्य के मूल में भक्ति भाव है | इसके तीन मुख्य रूप हैं – वात्सल्य, सख्य और कान्ता भाव | कृष्ण भक्ति के सभी सम्प्रदायों में कान्ता भाव की भक्ति को महत्व दिया गया है | कृष्ण भक्ति काव्य में इसके अतिरिक्त दास्य भाव की भक्ति तथा नवधा भक्ति के अन्य अंगों का भी चित्रण मिलता है |

3. कृष्ण भक्ति काव्य के पात्र –

कृष्ण भक्ति काव्य में भगवान् श्रीकृष्ण के जीवन की बाल लीलाओं से लेकर यौवन काल तक की लीलाओं का चित्रण मिलता है | इस कारण कृष्ण-काव्य के मुख्य चरित्रों में नन्द-यशोदा, बलराम-कृष्ण, उद्धव, राधा और अन्य गोपिकाएँ आदि हैं | कृष्ण-भक्त कवियों ने माधुर्य भाव की भक्ति के चित्रण में कृष्ण की बाल-लीलाओं और यौवन-लीलाओं के मध्य आने वाले चरित्रों को मुख्यता दी है | कृष्ण के सखाओं में उद्धव का चरित्र महत्वपूर्ण है | इन भक्त कवियों ने उद्धव के माध्यम से बुद्धि और तर्क पर भाव की, मस्तिष्क पर हृदय की, ज्ञान पर भक्ति की और निर्गुण पर सगुण की विजय दिखलाई गयी है |

4.प्रकृति चित्रण –

कृष्ण भक्ति साहित्य भावात्मक काव्य है | बाह्य प्रकृति का चित्रण इसमें या तो भाव की पृष्ठभूमि के रूप में हुआ है या उद्दीपन भाव के रूप में अथवा अलंकारों के अप्रस्तुत विधान के रूप में | प्रकृति के स्वतंत्र रूप का चित्रण प्रायः न के बराबर हुआ है | परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि प्रकृति के मनोरम और अनुकूल, भयानक और प्रतिकूल रूपों के चित्रण में कृष्ण भक्त कवियों ने अपने अद्भुत कौशल का परिचय दिया है | पृथ्वी, अंतरिक्ष, आकाश, जलाशय, वन, प्रान्त, यमुना कूल तथा कुञ्ज-भवन की सम्पूर्ण शोभा इन कवियों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में चित्रित की हैं |

5.रीति तत्व का समावेश –

कृष्ण भक्ति काव्य में शृंगारिक चित्रणों के साथ-साथ रीति तत्व का भी समावेश मिलता है | सूरदास तथा नंददास की रचनाएँ इसका प्रमाण हैं | सूरदास की 'साहित्य लहरी' में नायिका-भेद तथा अलंकारों का वर्णन मिलता है | नंददास की 'रसमंजरी' में भी नायिका-भेद, हाव, भाव, हेला, रति आदि का विस्तृत विवेचन हुआ है |

6.काव्य रूप-

कृष्ण भक्त कवियों का काव्य साहित्य प्रमुख रूप से गेय मुक्तक रूप में लिखा गया है | सम्पूर्ण कृष्ण काव्य में प्रबंध रचना बहुत कम पायी जाती है | कृष्ण काव्य का प्रत्येक पद अपने आप में स्वतंत्र अस्तित्व रखता है किन्तु उनमें एक क्रमबद्धता भी पायी जाती है |

7.शैली –

कृष्ण भक्ति काव्य में मुख्या रूप से गीति शैली का व्यवहार किया गया है | इन कवियों के साहित्य में गीति-शैली के सभी तत्व –भावात्मकता, संगीतात्मकता, वैयक्तिकता, संक्षिप्तता और भाषा की कोमलता आदि पूर्ण रूप से मिलते हैं |

8.छंद –

भावात्मक काव्य होने के कारण इस काव्य में गीति पदों का प्रयोग हुआ है | कलात्मक प्रसंगों में चौपाई, चौबोला सार तथा सरसी छंदों का प्रयोग किया गया है | नंददास ने 'रूप मंजरी' तथा 'रास मंजरी' आदि ग्रंथों में दोहा, चौपाई दोनों का प्रयोग किया है | इसके अतिरिक्त कृष्ण काव्य में कवित्त, सवैया, छप्पय, कुण्डलिया, गीतिका, हरिगीतिका आदि छंदों के भी प्रयोग मिलते हैं |

9.भाषा –

इस काव्य में सर्वत्र ब्रजराज कृष्ण की जन्मभूमि ब्रज की लोक प्रचलित भाषा ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है | ब्रजभाषा को लोकप्रिय बनाने में कृष्ण भक्ति काव्य की भूमिका महत्वपूर्ण है तथा सम्पूर्ण उत्तरी भारत में इस भाषा को लोकप्रिय बनाने में भी इस काव्य का प्रमुख योगदान है |

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृष्ण भक्ति काव्य भक्ति, आनंद और उल्लास का काव्य है | इसमें सर्वत्र ब्रजरस व्याप्त है जो कि अद्भुत और विलक्षण है | विशुद्ध कलात्मक दृष्टि से भी यह काव्य अनुपम है |